मुद्दा : इसलिए भी बढ़ रही आबादी

अशोक शर्मा

कभी किसी अर्थशास्त्री ने यह कल्पना नहीं की होगी कि किसी देश की जनसंख्या बढ़ने की वजहों में घुसपैठियों को भी महत्वपूर्ण कारक माना जाएगा। दरअसल, अर्थशास्त्र में जनसंख्या बढ़ने के परम्परागत कारण-लोगों की अज्ञानता, अशिक्षा, धार्मिक अंधविश्वास और गरीबी माने जाते हैं।

अनुमान है कि इस समय हमारे देश में घुसपैठियों की संख्या दस करोड़ के करीब है। घुसपैठियों में ज्यादातर बांग्लादेशी व रोहिंग्या मुसलमान हैं। देश की मौजूदा 1.37 अरब की आबादी में घुसपैठियों की इतनी बड़ी तादाद निश्चित तौर पर खतरनाक संकेत है।

यह उस देश की अर्थव्यवस्था पर एक बड़ा बोझ है, जो इस समय अपने आप को आर्थिक मोर्चे पर उबारने के लिए जद्दोजहद कर रहा हो। घुसपैठिए देश की कानून व्यवस्था और सुरक्षा के लिए भी चुनौती हैं। इन सब बातों से इतर हमारे देश की आबादी बहुत तेजी से बढ़ रही है। अनुमान है कि वर्ष 2024 यानी मात्र चार साल में हमारा देश 1.44 अरब की जनसंख्या के साथ दुनिया की सबसे अधिक आबादी वाला देश होगा। इस मामले में हम चीन को भी पीछे छोड़ देंगे। चीन ने इस मामले में अपने आप को संभाल लिया है।

उसने बड़ी सख्ती के साथ जनसंख्या नियंत्रण के उपायों को लागू किया है। एक बच्चे वाले दंपति को वहां विशेष सुविधाएं दी गई हैं। जबकि एक से ज्यादा बच्चे होने पर दंपति की आय का 50 प्रतिशत तक हिस्सा कर के रूप में वसूल लिया जाता है। इतना ही नहीं उनकी सरकारी नौकरी और अन्य लाभ भी वापस ले लिये जाते हैं। क्योंकि उसका सूत्र वाक्य है- हम दो, हमारा एक। अगर हम उसका सूत्र वाक्य नहीं अपना सकते तो कम-से-कम अपना सूत्र वाक्य- 'हम दो, हमारे दो' को तो अपना ही सकते हैं।

अन्यथा आने वाले समय में इसके और भयंकर परिणाम होंगे। जनसंख्या विस्फोट से निपटने के लिए अब जहां छोटे परिवारों को ही सरकारी सुविधाएं देने की बात की जा रही है वहीं बड़े परिवारों की वोटिंग पावर सीमित करने का विचार भी जन्म ले रहा है। यानी एक परिवार में माता-पिता के अलावा केवल दो संतानों को ही वोटिंग का अधिकार हो। दुनिया में जनसंख्या बढ़ने की एक वजह बड़े जोरों से चर्चा में है। इसका भी अर्थशास्त्र में कहीं उल्लेख नहीं है। वो है सत्ता पर कब्जे की चाह को लेकर एक खास समुदाय द्वारा अपनी जनसंख्या तेजी से बढ़ाना। यह कड़वी सच्चाई है कि जिसके पास जितने ज्यादा वोट है, वह उतनी बड़ी राजनीतिक शक्ति है और सत्ता में उसकी उतनी ज्यादा भागीदारी है।

यह सोच बहुत खतरनाक है और एक दिन इस सोच के विस्फोटक परिणाम सामने आएंगे। देश में इस वजह तेजी से जनसंख्या बढ़ने के बारे में ये आंकड़े पेश किए जा रहे हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार देश में मुस्लिम आबादी 13.4 फीसद और हिंदुओं की 80.5 फीसद थी। 2011 की जनगणना के मुताबिक देश में मुस्लिम आबादी बढ़कर 14.2 फीसद व हिंदुओं की आबादी घटकर 79.8 फीसद रह गई। वर्ष 2021 में होने वाली जनगणना को लेकर अनुमान लगाया जा रहा है कि मुस्लिम आबादी में बड़ा इजाफा होगा। विख्यात अर्थशास्त्री माल्थस का बढ़ती आबादी को नियंत्रित करने के बारे में कहना है कि जब जनसंख्या नियंत्रण के मानव निर्मित तरीके विफल हो जाते हैं, तब प्रकृति अपने तरीके से नियंत्रण करती है।

किसी देश की आबादी उत्पादन की तुलना में बहुत अधिक क्यों बढ़ती है, इस बारे में कल्याणकारी अर्थशास्त्री माल्थस का कहना है कि आबादी हमेशा जियोमेट्रिक अनुपात में बढ़ती है जैसे 2 से 4, 8, 16, 32 और 32 से 64, जबकि वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन गणितीय अनुपात में बढ़ता है जैसे 1, 2, 3, 4 ,5 ,6 ,7 ,8, 9..। ऐसे में स्वाभाविक तौर पर जनसंख्या उत्पादन की तुलना में बहुत तेजी से बढ़ती है। यानी उत्पादन जनसंख्या की तुलना में बहुत कम रह जाता है और दोनों के बीच दोनों में असंतुलन पैदा हो जाता है।

ऐसे देशों को ओवरपॉपुलेटेड देश की श्रेणी में रखा जाता है। अगर किसी देश के संसाधनों की तुलना में उसकी जनसंख्या कम हो तो वहां आबादी बढ़ना अच्छा माना जाता है क्योंकि उससे उस देश के संसाधनों का समुचित दोहन संभव हो पाता है और विकास की गाड़ी तेजी से आगे बढ़ती है। ऐसे देशों को अंडरपॉपुलेटेड देश माना जाता है। इसलिए आबादी का बढ़ना हमेशा नकारात्मक नहीं होता। क्वालिटेटिव (गुणात्मक) जनसंख्या का बढ़ना हमेशा किसी देश के लिए वरदान माना जाता है। इनमें डाक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, उच्च कोटि के विचारक, कानूनविद् शिक्षाविद् और अन्य श्रेष्ठ नागरिक शामिल हैं।

संपादकीय

अब दल-बल के साथ टिड्डी-दल

कल तक डर यह था कि मंदी आ रही है, हालांकि यह कई साल से आयी हुई है और जा नहीं रही है, बस मान लिया जाता है कि चली गयी है। फिर पता चलता है कि वह बिन बुलाये मेहमान की तरह फिर आ धमकी है। सरकार कहती है कि झूठ है, अफवाह है और अर्थशास्त्री कहते हैं कि नहीं वह सच्ची आ रही है। ऐसा लगता है जैसे सरकार आजकल मंदी और महंगाई से जूझने की बजाय झूठों और अफवाहों से ही ज्यादा जूझ रही है। खैर, कल तक यह डर था कि मंदी आ रही है। फिर पता चला कि महंगाई आ रही है।

सरकार ने खैर, इसे भी नहीं माना, पर सब्जी-भाजी खरीदने जाने वाली गृहणियां तक जानती हैं कि वह आ चुकी है। बस फर्क यह है कि सरकार अपनी बात मनवा लेती है, पर महंगाई से त्रस्त लोग अपनी बात नहीं मनवा पाते। वैसे वे खुद मान लें यह भी काफी है। क्योंकि जिस तरह से लोग महंगाई पर बात करने से बचते हैं, उससे लगता है कि कहीं ऐसा तो नहीं है कि वे खुद न मान रहे हों कि महंगाई आ रही है। पर अब खबर यह है कि टिड्डी दल आ रहे हैं। कल तक यह पाकिस्तान में थे, फसलों को खा रहे थे, तबाह कर रहे थे तो हम वैसे ही खुश थे जैसे उनके यहां महंगाई हो तो हम खुश होते हैं, उनकी अर्थव्यवस्था गर्त में जा रही हो तो हम खुश होते हैं और उनके यहां फौज सरकार की खिंचाई कर रही हो तो हम खुश होते हैं।

पर अब यह टिड्डी दल हमारे यहां भी आ रहे हैं। पता चला है कि राजस्थान के सीमावर्ती इलाकों में देखे गए हैं और पंजाब सरकार केंद्र को एप्रोच करने में लगी है। यह कुछ-कुछ वैसे ही जैसे पाकिस्तान में जलायी जाने वाली पराली का धुआं हमारे यहां आ जाता है। जैसे पाकिस्तान में उठने वाला धूल का बवंडर हमारे यहां आ जाता है। वैसे सरकार अगर चाहे तो वह पाकिस्तान पर यह एक और आरोप लगा सकती है कि जैसे वह आतंकवादी भेजता है, वैसे ही वह अब टिड्डी दल भेज रहा है।

वैसे आरोप लगाने वालों ने तो यह आरोप भी लगा दिया था कि पाकिस्तान में पराली इसीलिए जलायी जाती है कि ताकि दिल्ली का सांस घुट जाए। हम यह कतई नहीं देखते कि भैया पराली के धुएं और धूल के बवंडर की तरह ही टिड्डी दल भी सीमा नहीं देखते, सीमा पर खड़ी फौज नहीं देखते, कांटेदार बाड़ नहीं देखते। अब कारोना वायरस फैला तो चीन में ही है, पर डरे हुए तो हम भी हैं न। पड़ोसी के घर में आग लगती है तो उसकी लपटें हमारे घर तक पहुंचने का अंदेशा हमेशा ही रहता है। इसलिए पाकिस्तान पर परमाणु बम फोड़ने के लिए उतावली में रहने वाले लोगों को यह याद दिलाते रहना चाहिए कि भैया और कुछ नहीं तो उसका विकिरण तो यहां तक भी आएगा ही न।

सू- दोकू क्र.026

	2		6		8		3	
9		8		3		4		
							5	
5		2			7		6	
	8		4			1		3
				9				
8			9				1	
	5			1		6		2
		1	7				4	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.25 का हल

2	6	3	8	1	4	9	7	5
9	5	4	2	6	7	3	1	8
8	7	1	9	3	5		6	2
6	2	7	5	4	8	4	3	9
3	9	8	6	7	1	2	5	4
4	1	5	3	2	9	6	8	7
5	3	2	4	8	6	7	9	1
1	8	6	7	9	2	5	4	3
7	4	9	1	5	3	8	2	6

मल्टीकैप फंड में गुणवत्तापूर्ण निवेश

आलोक पुराणिक

बजट के आसपास इस आशय के कार्यक्रम बिजनेस टीवी चैनलों पर आने लगते हैं कि बजट से पहले कहां-कहां निवेश करना चाहिए। किन शेयरों में निवेश करना चाहिए, किन म्यूचुअल फंड योजनाओं में निवेश करना चाहिए। इस आशय के लेख भी छपने लगते हैं। लेकिन निवेशकों को एक बात समझनी चाहिए कि निवेश इस तरह से किसी घटना पर केंद्रित नहीं होना चाहिए कि बजट से पहले निवेश कर लिया या दीवाली से पहले निवेश कर लिया। या साल के शुरू में निवेश कर लिया, इस तरह की निवेश रणनीति सार्थक परिणाम नहीं देती, इसकी वजह यह है कि म्यूचुअल फंड का निवेश एक दीर्घकालीन प्रक्रिया के तहत होना चाहिए। इसमें छोटी अवधि के निवेश सार्थक परिणाम नहीं देते।

निस्संदेह बजट अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है और इसका महत्वपूर्ण असर निवेश जगत पर पड़ता है। स्टाक बाजार पर पड़ता है। पर इसका मतलब यह नहीं है कि कई निवेशक यह सूची बनाने बैठ जायें कि बजट से ठीक पहले इन शेयरों, इन म्यूचुअल फंड योजनाओं में निवेश करना चाहिए। निवेश को एक दीर्घकालीन प्रक्रिया होना चाहिए। बजट से पहले और बजट के बाद की निवेश योजनाओं के चक्कर में आम निवेशक को नहीं पड़ना चाहिए। इसलिए निवेशक को कुछ चुनिंदा ऐसी निवेश योजनाओं का विश्लेषण कर लेना चाहिए, उनकी जानकारी हासिल कर लेनी चाहिए, जो उसके हिसाब से उपयुक्त हों, फिर उनमें लगातार सतत निवेश करना चाहिए।

ऐसी ही एक निवेश योजना है-कोटक स्टैंडर्ड मल्टीकैप फंड। यह योजना म्यूचुअल फंड कोटक महिंद्रा म्यूचुअल फंड द्वारा चलायी जाती है। यह स्कीम हर आकार की कंपनी और हर उद्योग की कंपनी में निवेश करती है। कुछ म्यूचुअल फंड योजनाएं लार्ज कैप यानी बड़ी पूंजी वाली कंपनियों यानी बड़ी कंपनियों में निवेश करती हैं। कुछ म्यूचुअल फंड योजनाएं मिड कैप यानी मंझोले स्तर की कंपनियों में निवेश करती हैं, इन्हें मिडकैप योजनाएं कहा जाता है।

कुछ म्यूचुअल फंड योजनाओं के केंद्र में छोटी कंपनियां होती हैं, ऐसी योजनाओं को स्माल कैप कहा जाता है। मल्टीकैप योजना का मतलब यह हुआ कि यह स्कीम हर आकार की कंपनियों के शेयरों में निवेश कर सकती है। यानी मल्टीकैप के पास जैसी लोच रेंज होती है, वैसी लार्ज कैप के पास या स्माल कैप के पास नहीं होती। हालांकि, लार्ज कैप म्यूचुअल फंड योजनाओं के अलग तरह के फायदे हैं, बड़ी कंपनियों में निवेश अपेक्षाकृत सुरक्षित होता है, भले ही उनमें बहुत जोरदार रिटर्न भी आते हों, इसी तरह से स्माल कैप म्यूचुअल फंड योजनाओं में रिटर्न बहुत जोरदार हो सकता है, पर इनमें निवेश अपेक्षाकृत थोड़ा कम सुरक्षित रहता है। मल्टीकैप योजनाएं हर तरह की कंपनियों की प्रतिभूतियों में निवेश कर सकती हैं, इसलिए इस तरह की योजनाओं को हर आकार की कंपनियों में निवेश का लाभ मिल जाता है, यह स्कीम के प्रबंधक के कौशल पर निर्भर रहता है कि वह किस हद तक हर आकार की कंपनियों में निवेश का फायदा अपनी स्कीम को दिला पाया है।

कोटक स्टैंडर्ड मल्टीकैप फंड के रिटर्न 29 जनवरी, 2020 के आंकड़ों के हिसाब से एक साल में 19.20 प्रतिशत रहे और 3 सालों में सालाना रिटर्न इसका 12.72 प्रतिशत रहा। पांच सालों में इसने सालाना रिटर्न 9.78 प्रतिशत का दिया और सात सालों की अवधि में इसका सालाना रिटर्न 16.45 प्रतिशत रहा। दस सालों का हिसाब-किताब लगायें, तो इस स्कीम ने 14.32 प्रतिशत सालाना रिटर्न दिया है। यानी जो भी निवेशक दस सालों के लिए इस स्कीम में निवेशित रहा है, उसे 14.32 प्रतिशत का सालाना रिटर्न मिला है, इसे बेहतरीन रिटर्न माना जा सकता है।